प्रारंभिक परीक्षा

भारत ने चीनी वस्तुओं पर एंटी-डंपिंग शुल्क लगाया

संदर्भ

घरेलू निर्माताओं का सस्ते आयात से संरक्षण करने के लिए भारत ने चीन से आयातित पांच उत्पादों पर एंटी डंपिंग शुल्क लगा दिया है।

एंटी-डंपिंग शुल्क(Anti-Dumping Duty) क्या है?

- **एंटी-डंपिंग शुल्क एक संरक्षणवादी टैरिफ है जो किसी देश द्वारा उन विदेशी आयातों पर लगाया जाता है जिनकी कीमत उचित बाजार मूल्य से कम होती है।**
- यह अनुचित व्यापार प्रथाओं को रोकता है और घरेलू उद्योगों को सस्ते आयातित सामानों से होने वाले आर्थिक नुकसान से बचाता है।
- भारत में, एंटी-डंपिंग उपायों को **वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के तहत व्यापार उपचार महानिदेशालय** (**DGTR**) द्वारा कार्यान्वित किया जाता है।
- **डंपिंग क्या है**?
    - **डंपिंग तब होती है जब कोई विदेशी कंपनी अपने घरेलू बाजार मूल्य या उत्पादन लागत से कम कीमत पर उत्पाद का निर्यात करती है।**
- **सर्वाधिक पसंदीदा राष्ट्र** (**MFN**) **का दर्जा:** यह डब्ल्यूटीओ समझौतों के तहत एक व्यापार सिद्धांत है, जिसके तहत देशों को सभी डब्ल्यूटीओ सदस्यों के लिए समान व्यापार शर्तें लागू करनी होती है।
    - भारत ने चीन को **MFN का दर्जा** दिया है, लेकिन वह अभी भी WTO नियमों के तहत एंटी-डंपिंग शुल्क लगा सकता है।

प्रतिकारी शुल्क (CVD) -

- यह उन आयातों पर लगाया जाता है **जिन्हें अपनी सरकार से सब्सिडी मिलती है।**
- यह घरेलू उत्पादकों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करता है।

सीमा शुल्क (कस्टम ड्यूटी) -

- यह अंतर्राष्ट्रीय सीमाओं के पार माल के परिवहन पर लगाया जाने वाला कर है।
- भारत की टैरिफ प्रणाली **सीमा शुल्क सहयोग परिषद** की **सामंजस्यपूर्ण नामकरण प्रणाली** (**HSN**) पर आधारित है।
- भारत में सीमा शुल्क को **सीमा शुल्क अधिनियम, 1962** के तहत परिभाषित किया गया है और इससे संबंधित सभी मामले **केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमा शुल्क बोर्ड** (**CBIC**) के अंतर्गत आते हैं।
    - **CBIC भारत सरकार के वित्त मंत्रालय के राजस्व विभाग के अधीन कार्य करता है।**

स्रोत:

- The Hindu - Anti-Dumping duty

मियावाकी पद्धति(Miyawaki Method)

संदर्भ

प्रयागराज में हाल ही में संपन्न महाकुंभ के दौरान, **उत्तर प्रदेश सरकार** ने वनरोपण और "**ऑक्सीजन बैंक**" बनाने तथा हरित आवरण बढ़ाने के लिए **मियावाकी तकनीक** को लागू किया।

मियावाकी पद्धति के बारे में -

- यह **1970 के दशक में जापानी वनस्पतिशास्त्री अकीरा मियावाकी द्वारा विकसित एक सघन वनीकरण तकनीक है।**
- यह प्राकृतिक पारिस्थितिकी तंत्र की नकल करके कम समय में **आत्मनिर्भर वन** बनाने में मदद करता है।
- यह विधि विशेष रूप से **शहरी क्षेत्रों** में प्रभावी है जहाँ स्थान सीमित है और इसका उपयोग **वनों की कटाई, जलवायु परिवर्तन और शहरी प्रदूषण से निपटने** के लिए किया जाता है।

मियावाकी पद्धति की मुख्य विशेषताएं -

- **देशी प्रजातियों पर ध्यान केंद्रित करना**:
  - **उच्च उत्तरजीविता दर** सुनिश्चित करने के लिए केवल **देशी वृक्ष प्रजातियों** को ही लगाया जाता है।
  - इन वृक्षों को प्रारंभिक चरण के बाद **कम पानी, उर्वरक और रखरखाव** की आवश्यकता होती है।
- **उच्च घनत्व वृक्षारोपण**:
  - पौधों को **प्रति वर्ग मीटर 3-5 पौधे** लगाए जाते हैं, जिससे **घना हरित आवरण** बनता है।
  - पेड़ों के बीच कम दूरी होने से उन्हें सूर्य का प्रकाश के लिए प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है, जिसके परिणामस्वरूप त्वरित **ऊर्ध्वाधर वृद्धि** होती है।
- **तीव्र विकास एवं आत्मनिर्भर वन**:
  - पारंपरिक वनरोपण विधियों की तुलना में पेड़ **10 गुना तेजी** से बढ़ते हैं।
  - एक पूर्ण विकसित वन **100-200 वर्षों के बजाय 20-30 वर्षों में** प्राप्त किया जा सकता है।
  - **3 वर्षों** के बाद, वन **आत्मनिर्भर** हो जाते हैं, जिसके लिए न्यूनतम मानवीय हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।
- **बहुस्तरीय वन संरचना**: **यह** वनस्पति की चार परतों के साथ एक **प्राकृतिक वन** की नकल करता है:
  - **झाड़ियाँ** (छोटी झाड़ियाँ और पौधे)
  - **उप-वृक्ष** (मध्यम आकार के पेड़)
  - **छत्र (कैनोपी) वृक्ष** (घने ऊपरी आवरण बनाने वाले ऊँचे पेड़)
  - **उभरते हुए वृक्ष/Emergent trees** (कैनोपी से आगे तक फैले सबसे ऊँचे पेड़)।

यूपीएससी विगत वर्षों के प्रश्न

प्रश्न. "**मियावाकी पद्धति**" **किसके लिए विख्यात है? (2022)**

(a) शुष्क और अर्ध-शुष्क क्षेत्रों में वाणिज्यिक कृषि का संवर्धन।
(b) आनुवंशिकतः रूपांतरित पुष्पों का प्रयोग कर उद्यानों का विकास।
(c) शहरी क्षेत्रों में लघु वनों का सृजन।
(d) तटीय क्षेत्रों और समुद्री सतहों पर पवन ऊर्जा का संग्रहण।

उत्तर: C

स्रोत:

- The Hindu - Miyawaki

समाचार में स्थान

माउंट लेवोटोबी लाकी-लाकी

- हाल ही में लेवोटोबी लाकी-लाकी ज्वालामुखी उद्गार हुआ, जिससे 8 किमी से अधिक ऊंचाई पर राख के बादल छा गए, जिससे उच्चतम चेतावनी स्तर एवं उड़ान में व्यवधान उत्पन्न हुआ।

तथ्य

- इंडोनेशिया में विश्व में सर्वाधिक ज्वालामुखी हैं, जिनमें 120 सक्रिय ज्वालामुखी और 126 कुल ज्वालामुखी हैं, जिनमें छह सबमरीन ज्वालामुखी भी शामिल हैं।
- इंडोनेशिया के अधिकतर ज्वालामुखी सुंडा आर्क पर स्थित हैं, जो 3,000 किलोमीटर लंबी श्रृंखला है।
- ये ज्वालामुखी एशियाई प्लेट के नीचे हिंद महासागर की सतह के धंसने से निर्मित हुए।

- **अवस्थिति:** फ्लोरेस द्वीप, दक्षिणपूर्वी इंडोनेशिया।
- यह लेवोटोबी जुड़वां ज्वालामुखी परिसर का हिस्सा है, जिसमें लेवोटोबी लाकी-लाकी (पुरुष) और लेवोटोबी पेरेमपुआन (महिला) मिश्रित ज्वालामुखी शामिल हैं।
- **मिश्रित ज्वालामुखी:** यह एक विशाल, खड़ी ढलान वाला ज्वालामुखी है, जो कठोर लावा, राख एवं अन्य ज्वालामुखी मलबे की परतों से निर्मित हुआ है। वे अपनी खड़ी ढलानों, विस्फोटक उद्गारों और उच्च चिपचिपाहट वाले मैग्मा के लिए जाने जाते हैं।

स्रोत:

- The Hindu - Lewotobi

थ्वाइट्स ग्लेशियर

- **अवस्थिति:** पश्चिमी अंटार्कटिका, पश्चिमी अंटार्कटिक बर्फ की चादर का भाग।
- **उपनाम:** डूम्सडे ग्लेशियर (समुद्र के स्तर को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ाने की इसकी क्षमता के कारण)
- यह एक प्राकृतिक अवरोधक के रूप में कार्य करता है, जो अंतर्देशीय ग्लेशियरों को तेजी से समुद्र में बहने से रोकता है।
- इसमें इतनी बर्फ है कि, यदि यह पूरी तरह पिघल जाए तो, वैश्विक समुद्र का स्तर **~3-5** मीटर तक बढ़ सकता है।
- यह ग्रेट ब्रिटेन के आकार के लगभग एक क्षेत्र को कवर करता है।

स्रोत:

The Hindu - Thwaites

समाचार संक्षेप में

नेशनल ई-विधान एप्लीकेशन (NeVA) प्लेटफार्म

- हाल ही में दिल्ली, नेशनल ई-विधान एप्लीकेशन (NeVA) प्लेटफॉर्म से जुड़ने वाली 28वीं विधानसभा बन गई।

ई-विधान क्या है?

- **ई-विधान एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है, जिसे भारत की विधान सभाओं को पेपरलेस संस्थानों में परिवर्तित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है।**
- इसे संसदीय कार्य मंत्रालय (**MoPA**) द्वारा राष्ट्रीय ई-गवर्नेंस योजना (**NeGP**) के तहत विकसित किया गया है।
- **इसका उद्देश्य दक्षता, पारदर्शिता और जवाबदेही में सुधार के लिए, संपूर्ण विधायी प्रक्रिया का डिजिटलीकरण करना है।**

NeVA (नेशनल ई-विधान एप्लीकेशन)

- **NeVA,** विधायी कार्यों को पेपरलेस तरीके से प्रबंधित करने के लिए, एक क्लाउड-आधारित प्लेटफ़ॉर्म है।
- इसे **MoPA** द्वारा विकसित किया गया है तथा यह विभिन्न विधायी कार्यों को एक एकल डिजिटल इंटरफ़ेस में एकीकृत करता है।
- यह बिल, बहस, प्रश्न सूचियों, रिपोर्टों और अन्य विधायी दस्तावेज़ों तक, वास्तविक समय में पहुँच का समर्थन करता है।

स्रोत:

- PIB - NEVA

लैपिस लैज़ूली: चमकीला नीला रत्न

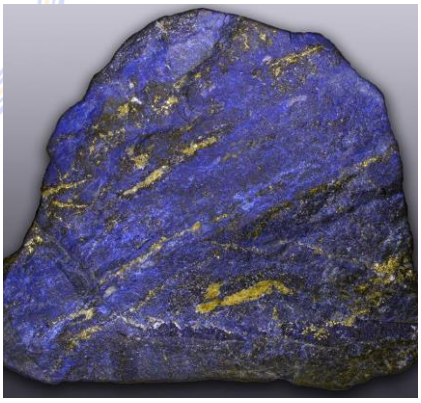

- **लैपिस लैज़ूली एक गहरे नीले रंग की रूपांतरित चट्टान है, जो 25-40% लेजुराइट से बनी है, जो इसे इसका चमकीला नीला रंग प्रदान करती है।**
- **खनिज सामग्री:** इसमें कैल्साइट (जो इसके नीलेपन को कम कर सकता है), पाइराइट (जो इसमें सुनहरी चमक जोड़ता है), डायोसाइड और सोडालाइट कम मात्रा में होता है।
- **खनन:** यह चिली, रूस और अफ़गानिस्तान में पाया जाता है।
  - **उच्चतम गुणवत्ता:** अफगानिस्तान के बदख्शां प्रांत में पाया गया, जहां **6,000** वर्षों से अधिक समय से खनन जारी है।
- **ऐतिहासिक महत्व:**
  - **भारत:** व्यापारी **1000** ईसा पूर्व बदख्शां से लैपिस लैज़ूली का आयात करते थे।
  - **सिंधु घाटी सभ्यता (मोहनजोदड़ो और हड़प्पा):** सजावटी आभूषणों के लिए उपयोग किया जाता था।

स्रोत:

The Hindu - Lapis Lazuli

संपादकीय सारांश

कोविड के बाद प्रवास

संदर्भ

महामारी के पांच साल बाद भारत के प्रवास परिदृश्य में महत्वपूर्ण बदलाव आया है।

समाचार के बारें में और अधिक जानकारी -

- सरकारी अनुमानों के अनुसार पहले लॉकडाउन के दौरान 44.13 मिलियन व्यक्तियों का शुद्ध रिवर्स माइग्रेशन हुआ और दूसरे लॉकडाउन के दौरान 26.3 मिलियन लोगों का।
- इस प्रक्रिया में मुख्य रूप से कम वेतन वाले, कम कुशल, मौसमी और अल्पकालिक प्रवासी शामिल थे।

रिवर्स माइग्रेंट्स के समक्ष आई चुनौतियाँ -

- वेतन की कमीं।
- तीव्र खाद्य असुरक्षा।
- स्वास्थ्य सेवा और शिक्षा तक पहुँच की कमी।
- भेदभाव और कलंक।
- धन प्रेषण पर निर्भर परिवारों पर आर्थिक दबाव।

महामारी के बाद का प्रवास -

- ग्रामीण अर्थव्यवस्था की सीमाओं के कारण अधिकांश रिवर्स माइग्रेंट संभवतः शहरी क्षेत्रों में वापस आ गए हैं, जैसे:
    - मनरेगा ने केवल आंशिक और अस्थायी राहत प्रदान की।
    - आर्थिक अवसरों की कमी, ग्रामीण संकट और कम ग्रामीण मज़दूरी की स्थिति बनी हुई है।
    - **शहरी आकांक्षाएँ** शहरों की ओर वापस प्रवास को बढ़ावा दे रही हैं।
    - **जलवायु परिवर्तन** कृषि और संबद्ध गतिविधियों को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित कर रहा है।
        - संकट और आकांक्षापूर्ण प्रवास में योगदान।

शहरी प्रवास अनुमान: स्मार्ट सिटी मिशन जैसी पहलों से प्रेरित होकर, **2026** तक भारत की **40%** आबादी शहरों में निवास करेगी, जिसका उद्देश्य ऐसे शहरी केंद्रों का विकास करना है जो प्रवासी श्रमिकों पर बहुत अधिक निर्भर हों।.

- **अंतर्राष्ट्रीय प्रवास में बदलाव**: महामारी के बाद, अंतर्राष्ट्रीय प्रवास के पैटर्न में बदलाव आया है:
    - खाड़ी सहयोग परिषद (जीसीसी) देशों में प्रवास मजबूत बना हुआ है।
    - **2023** में **यूरोपीय संघ के ब्लू कार्ड कार्यक्रम** (उच्च योग्यता प्राप्त पेशेवरों के लिए कार्य वीज़ा) के शीर्ष लाभार्थी भारतीय थे।
    - माल्टा और जॉर्जिया जैसे गैर-पारंपरिक यूरोपीय गंतव्यों में प्रवास में वृद्धि देखी गई है।
    - भारतीय प्रवासी आईटी और स्वास्थ्य सेवा जैसे क्षेत्रों में अवसरों के लिए अफ्रीका का रुख कर रहे हैं।

प्रवासन प्रशासन में चुनौतियाँ

- **डेटा अंतराल**: **2021** की जनगणना में देरी से प्रवासन पैटर्न और महामारी के दीर्घकालिक प्रभाव का सटीक आकलन बाधित हुआ है।

  - आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) **2020-21** में **28.9% (2007-08** में **28.5%** से थोड़ा अधिक) की प्रवासन दर दर्ज की गई, लेकिन डेटा दीर्घकालिक रुझानों के स्थान पर अस्थायी व्यवधानों को दर्शाता है।
  - भारतीय प्रवासियों पर व्यापक डेटा का अभाव - विदेश मंत्रालय की गणना संभवतः कम आंकी गई है।
- **राज्यों और केंद्र के बीच समन्वय की कमी**: प्रवासन शासन केंद्र और राज्य सरकारों के बीच विखंडित है।
  - अपर्याप्त समन्वय असंगत नीतियों और कार्यान्वयन अंतराल की ओर ले जाता है।
- **गैर-पारंपरिक गंतव्यों में प्रवासी सहायता की कमी**: यूरोप (जैसे, माल्टा, जॉर्जिया) और अफ्रीका में बढ़ते प्रवास के साथ-साथ इन क्षेत्रों में भारतीय प्रवासियों के लिए पर्याप्त सहायता नेटवर्क नहीं है।
- **प्रवासियों के लिए अपर्याप्त सामाजिक सुरक्षा**:
  - ई-श्रम पोर्टल (**2021)** का उद्देश्य असंगठित श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा प्रदान करना था, लेकिन पंजीकरण निम्न कारणों से रुका हुआ है:
    - जागरूकता की कमी।
    - डिजिटल पहुँच बाधाएँ।
  - **वन नेशन वन राशन कार्ड** (**ONORC)** योजना (**2018)** प्रवासियों के एक बड़े वर्ग तक पहुँचने में चुनौतियों का सामना कर रही है, जिससे कई लोग खाद्य सुरक्षा से वंचित हैं।

क्या किया जाना चाहिए -

- **डेटा संग्रह और विश्लेषण को मजबूत करना**
  - **2021** की जनगणना को पूरा करके प्रवासन डेटा को अपडेट किया जाना चाहिए।
  - विदेश मंत्रालय के तहत भारतीय प्रवासियों का एक व्यापक डेटाबेस स्थापित करना।
  - प्रवासन प्रवृत्तियों का अधिक सटीक रूप से अवलोकन करने के लिए आवधिक श्रम बल सर्वेक्षण (पीएलएफएस) का विस्तार करना।
- **सामाजिक सुरक्षा योजनाओं का विस्तार और सुधार करना**
  - ई-श्रम पोर्टल के लिए जागरूकता और डिजिटल पहुँच बढ़ाना।
  - प्रवासियों की व्यापक कवरेज सुनिश्चित करने के लिए **ONORC** योजना की सुवाह्यता (पोर्टेबिलिटी) और समावेशिता में सुधार करना।
- **नए गंतव्यों में प्रवासी सहायता नेटवर्क स्थापित करना**
  - पूर्वी यूरोप और अफ्रीका जैसे गैर-पारंपरिक गंतव्यों में प्रवासियों के लिए सहायता बुनियादी ढाँचा स्थापित करना।
  - विदेशों में प्रवासी श्रमिकों के लिए विधिक और वित्तीय मार्गदर्शन प्रदान करना।
- **ग्रामीण रोजगार के अवसरों को बढ़ाना**
  - उच्च मजदूरी दरों और दीर्घकालिक कार्य अवधि के साथ **MGNREGA** को मजबूत करना।
  - गैर-कृषि रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए ग्रामीण औद्योगीकरण और कौशल विकास को बढ़ावा देना।
- **जलवायु परिवर्तन के प्रति लचीलापन को प्रवास नीति में शामिल करना**
  - जलवायु-प्रेरित प्रवास का समाधान करने के लिए लक्षित कार्यक्रम विकसित करना।
  - जलवायु-प्रभावित क्षेत्रों को वित्तीय और अवसंरचनात्मक सहायता प्रदान करना।
- **केंद्र और राज्यों के बीच समन्वय में सुधार करना**
  - एक समान नीति कार्यान्वयन सुनिश्चित करने के लिए एक **राष्ट्रीय प्रवास परिषद** की स्थापना करना।
  - केरल **प्रवास सर्वेक्षण मॉडल** के समान राज्य-विशिष्ट प्रवास सर्वेक्षणों को प्रोत्साहित करना।

स्रोत: **Indian Express: Migration, After Covid**

भारत के लिए शुद्ध शून्य लक्ष्य हासिल करने का मार्ग

संदर्भ

शुद्ध शून्य उत्सर्जन लक्ष्य तक पहुंचने के लिए भारत को निकट भविष्य में बहुत कुछ हासिल करना होगा।

- **शुद्ध-शून्य लक्ष्य: भारत का लक्ष्य 2070 तक शुद्ध-शून्य उत्सर्जन** तक पहुंचना है।
- **2030 के प्रमुख लक्ष्य:**
  - उत्सर्जन तीव्रता में 50% की कमी।
  - नवीकरणीय स्रोतों से 500 गीगावाट ईंधन क्षमता।
  - नए पवन और सौर ऊर्जा स्रोतों में 290 बिलियन अमेरिकी डॉलर का निवेश।

केंद्रीय बजट 2025 – प्रमुख हरित पहल -

- 2047 तक 100 गीगावाट परमाणु क्षमता।
- **समर्थन हेतु:**
  - सौर उपकरण विनिर्माण।
  - ग्रिड-स्केल बैटरी।
  - स्क्रैप सामग्री और महत्वपूर्ण खनिज रीसाइक्लिंग के लिए प्रोत्साहन।

समाचार के बारें में और अधिक जानकारी -

- **द फ्लेचर स्कूल (टफ्ट्स यूनिवर्सिटी) और वर्ल्ड** द्वारा किए गए शोध में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि भारत का विकास (विकसित भारत) और शुद्ध शून्य की यात्रा आपस में जुड़ी हुई हैं।
- इस विषय पर 2025 रायसीना डायलॉग में बदलते "ग्लोबल ग्रीन डील" के संदर्भ में चर्चा की गई थी।

तेज़ और हरित विकास में संतुलन की चुनौतियाँ -

- **कार्बन-गहन गतिविधियों पर उच्च निर्भरता:** भारत के विद्युत उत्पादन में कोयले का योगदान 55-60% है।
  - कोयले की मांग 2030 और 2035 के बीच ही चरम पर पहुंचने की उम्मीद है।
- **जलवायु जोखिमों की आर्थिक लागत:** जलवायु संबंधी जोखिमों के कारण 2030 तक सकल घरेलू उत्पाद में 2.8% की हानि हो सकती है।
  - अत्यधिक गर्मी से 2030 तक सकल घरेलू उत्पाद में 2.5%-4.5% तथा 2050 तक 10% तक की कमी आ सकती है।
  - अत्यधिक गर्मी के कारण श्रम उत्पादकता में कमी से 2030 तक 220 बिलियन डॉलर का नुकसान हो सकता है।
  - यदि उद्योगों को कार्बन मुक्त नहीं किया गया तो भारतीय वस्तुओं के आयातकों द्वारा लगाए गए कार्बन लागत दंड के कारण 2040 तक निर्यात राजस्व में प्रतिवर्ष 150 बिलियन डॉलर की हानि हो सकती है।
  - आयातित जीवाश्म ईंधन (कच्चे तेल का 85% और प्राकृतिक गैस का 50%) पर निर्भरता अर्थव्यवस्था को मूल्य अस्थिरता और भू-राजनीतिक जोखिमों के प्रति उजागर करती है।

हरित विकास के संभावित लाभ -

- **रोजगार सृजन:** हरित विकास से भारत में 2070 तक 50 मिलियन नए रोजगार सृजित हो सकते हैं (विश्व आर्थिक मंच की मिशन 2070 रिपोर्ट)।
  - 2030 तक 1 ट्रिलियन डॉलर तथा 2070 तक 15 ट्रिलियन डॉलर तक अतिरिक्त आर्थिक मूल्य उत्पन्न हो सकता है।
- **नवप्रवर्तन और विनिर्माण:** उत्पादकता और विकास पर प्रभाव के साथ विनिर्माण और तकनीकी नवप्रवर्तन को बढ़ावा देता है।

- **स्वास्थ्य लाभ:** स्वास्थ्य में सुधार होता है, जिससे उत्पादकता और आर्थिक उत्पादन बढ़ता है।
- **ऊर्जा सुरक्षा:** वैश्विक झटकों और भू-राजनीतिक दबावों के प्रति भारत की लचीलापन को मजबूत करता है।

समग्र हरित विकास के लिए रणनीतियाँ -

- **व्यापक नवीकरणीय योजना:**
    - नवीकरणीय क्षमता में निवेश को जलवायु अनुकूलन के साथ जोड़ना।
    - सहायक बुनियादी ढांचे का विकास:
        - संचरण और भंडारण प्रणाली
        - सार्वजनिक-निजी सहयोग
        - कार्बन कैप्चर और भंडारण
- **मांग-पक्ष उपाय:** किसानों (कार्यबल का 45%) को निम्नलिखित तक पहुंच की आवश्यकता है:
    - सस्ती जलवायु-लचीली बुनियादी संरचना
    - सूखा प्रतिरोधी फसलें और कृषि पद्धतियाँ
    - एमएसएमई (जीडीपी में 30% योगदान) को निम्नलिखित तक पहुंच की आवश्यकता है:
        - टिकाऊ प्रौद्योगिकियाँ
        - हरित वित्त
        - शिक्षा और सब्सिडी
    - कार्बन मूल्य निर्धारण और हरित वित्त योजनाओं जैसे उपकरणों का विस्तार किया जा सकता है।
- **संक्रमण जोखिम का प्रबंधन:** कोयला-निर्भर राज्यों को निम्नलिखित तरीकों से सहायता प्रदान करना:
    - श्रमिकों को पुनः कौशल प्रदान करना।
    - अर्थव्यवस्थाओं का पुनर्निर्माण।
    - हरित परिवर्तन से लाभान्वित होने वाले राज्यों से क्रॉस-सब्सिडी।
- **वैश्विक साझेदारियां और सहयोग:** अंतर्राष्ट्रीय कर्ताओं के साथ सहयोग से निम्नलिखित को बढ़ावा मिल सकता है:
    - तकनीकी विशेषज्ञता
    - परियोजना प्रबंधन
    - नवीन वित्तपोषण (जैसे, ग्रीन बांड, मिश्रित वित्त)।
    - बहुपक्षीय विकास बैंक निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए गारंटी दे सकते हैं।

निष्कर्ष

- भारत के लिए विकसित भारत (2047) और शुद्ध शून्य(2070) दोनों लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए हरित विकास के प्रति समग्र और रणनीतिक दृष्टिकोण आवश्यक है।
- **तीव्र विकास और हरित विकास के बीच संतुलन स्थापित करने के लिए निम्नलिखित की आवश्यकता है:**
    - मजबूत बुनियादी ढांचे और प्रौद्योगिकी निवेश
    - नीतिगत सुधार
    - वैश्विक सहयोग
    - आर्थिक व्यवधानों के लिए रणनीतिक अनुकूलन

स्रोत: **Indian Express: The Green Path to Growth**

मार्क कार्नी के नेतृत्व में भारत और कनाडा के लिए अवसर

संदर्भ

कनाडा के नए नेता के रूप में मार्क कार्नी का उदय जस्टिन ट्रूडो के कार्यकाल से एक बदलाव का संकेत है, जो भारत को राजनयिक संबंधों को फिर से स्थापित करने और व्यापार, सुरक्षा और रणनीतिक सहयोग को मजबूत करने का अवसर प्रदान करता है।

पिछले कुछ वर्षों में भारत-कनाडा संबंध -

- **प्रारंभिक राजनयिक संबंध (1947-1974)**
  - भारत और कनाडा ने भारत की स्वतंत्रता के तुरंत बाद 1947 में राजनयिक संबंध स्थापित किये।
  - कनाडा के प्रधानमंत्री लुईस सेंट लॉरेंट ने 1954 में भारत का दौरा किया, जिससे द्विपक्षीय संबंध मजबूत हुए।
  - संबंध सकारात्मक थे, तथा विकास सहयोग और राष्ट्रमंडल संबंधों पर ध्यान केन्द्रित किया गया।
- **परमाणु मुद्दों पर तनाव (1974-1998)**
  - 1974 में भारत के परमाणु परीक्षण (पोखरण-I) के बाद कनाडा ने परमाणु सहयोग रोक दिया।
  - 1998 में भारत के परमाणु परीक्षण (पोखरण-II) के बाद तनाव और बढ़ गया।
- **नवीनीकृत जुड़ाव (2000-2010)**
  - बढ़ते व्यापार और निवेश संबंधों के साथ संबंधों में सुधार हुआ।
  - **भारत-कनाडा परमाणु सहयोग समझौते (2010**) ने नागरिक उपयोग के लिए भारत को यूरेनियम निर्यात की अनुमति दी।
- **रणनीतिक संबंधों को मजबूत करना (2010-2018)**
  - प्रधानमंत्री स्टीफन हार्पर (2012) और प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी (2015) ने एक-दूसरे के देशों का दौरा किया।
  - द्विपक्षीय व्यापार और रक्षा सहयोग बढ़ा।
  - कनाडा ने भारत को हिंद-प्रशांत क्षेत्र में एक रणनीतिक साझेदार के रूप में मान्यता दी।
- **ट्रूडो के अधीन चुनौतियाँ (2018–2023)**
  - खालिस्तानी अलगाववाद के तनाव से राजनयिक संबंध प्रभावित हुए।
  - हरदीप सिंह निज्जर की हत्या (2023) से संबंध तनावपूर्ण हो गए, जिससे कूटनीतिक मतभेद उत्पन्न हो गया।

ट्रूडो के जाने के बाद भारत के लिए संभावित सुधार और अवसर -

- **राजनयिक संबंधों की बहाली:** भारत कनाडा में अपने उच्चायुक्त को पुनः नियुक्त कर सकता है, जो राजनयिक संबंधों के सामान्यीकरण का संकेत होगा।
  - ट्रूडो को पद से हटाने से, जिन्हें खालिस्तानी तत्वों से प्रभावित माना जाता था, अधिक व्यावहारिक सहभागिता का द्वार खुल गया है।
- **व्यापार और आर्थिक सहयोग:** रुकी हुई व्यापक आर्थिक भागीदारी समझौते (CEPA) वार्ता की बहाली से द्विपक्षीय व्यापार को बढ़ावा मिल सकता है।
  - स्वच्छ ऊर्जा, कृषि-तकनीक और फार्मा पर कनाडा का ध्यान भारत के लिए नए व्यापार अवसर प्रस्तुत करता है।
  - भारत कनाडाई निवेश को आकर्षित करने के लिए अपने बढ़ते बाजार और कुशल कार्यबल का लाभ उठा सकता है।
- **सामरिक और सुरक्षा सहयोग:** दोनों देश हिंद-प्रशांत सुरक्षा, समुद्री क्षेत्र जागरूकता और आतंकवाद-निरोध पर सहयोग को गहरा कर सकते हैं।
  - भारत और कनाडा स्वतंत्र और खुले हिंद-प्रशांत क्षेत्र को सुनिश्चित करने के लिए समान रुख रखते हैं, विशेष रूप से चीन के बढ़ते प्रभाव के मद्देनजर।

- **प्रवासी जुड़ाव और आव्रजन:** बेहतर राजनीतिक माहौल कनाडा में भारतीय प्रवासियों की भूमिका को मजबूत कर सकता है, क्योंकि यह गहरे संबंधों के लिए एक सेतु का काम करेगा।
    - भारत लोगों के बीच आदान-प्रदान को सुविधाजनक बनाने के लिए आसान कार्य और छात्र वीज़ा के लिए दबाव डाल सकता है।
- **ऊर्जा और जलवायु सहयोग:** भारत और कनाडा स्वच्छ हाइड्रोजन और नवीकरणीय ऊर्जा सहित हरित ऊर्जा परिवर्तन पर सहयोग कर सकते हैं।
    - कार्बन कर का बोझ उपभोक्ताओं से हटाकर निगमों पर डालने से भारतीय कम्पनियों के लिए व्यावसायिक अवसर पैदा हो सकते हैं।
- **खालिस्तानी प्रभाव में कमी:** ट्रूडो के जाने से कनाडा की राजनीति में खालिस्तानी तत्वों का प्रभाव कम हो सकता है।
    - कम शत्रुतापूर्ण राजनीतिक माहौल भारत को अपनी सुरक्षा चिंताओं का अधिक प्रभावी ढंग से समाधान करने में सक्षम बनाएगा।
- **बहुपक्षीय सहयोग:** भारत और कनाडा वैश्विक व्यापार, जलवायु कार्रवाई और भू-राजनीतिक स्थिरता जैसे मुद्दों पर संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन और जी-20 जैसे अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर अपनी रणनीतियों को संरेखित कर सकते हैं।
    - कनाडा द्वारा अपनी हिंद-प्रशांत नीति में भारत को प्रमुख साझेदार के रूप में मान्यता देने से भारत का सामरिक महत्व बढ़ जाता है।

स्रोत: **Indian Express: After Trudeau, An Opening**

विस्तृत कवरेज

क्षय रोग नियंत्रण और मुद्दे

संदर्भ

विश्व क्षय रोग दिवस प्रतिवर्ष **24 मार्च** को मनाया जाता है।

क्षय रोग (टीबी) के बारे में -

- **यह एक जीवाणुजनित संक्रमण है <u>जो संक्रमित व्यक्ति के खांसने या छींकने से निकलने वाली छोटी बूंदों</u> के माध्यम से फैलता है।**
- **इसका कारण: माइकोबैक्टीरियम ट्यूबरकुलोसिस** नामक जीवाणु है, जो माइकोबैक्टीरियासी परिवार से संबंधित है।
- **संचरण:** हवा के माध्यम से एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति में।
    - जब फेफड़े के टीबी से पीड़ित व्यक्ति खांसते, छींकते या थूकते हैं, तो वे टीबी के कीटाणुओं को हवा में फैला देते हैं।
- **प्रभावित करता है:** मनुष्यों में, टीबी सबसे अधिक **फेफड़ों (पल्मोनरी टीबी) को प्रभावित करता है**, लेकिन यह <u>अन्य अंगों (एक्स्ट्रा-पल्मोनरी टीबी) को भी प्रभावित कर सकता है</u> ।
- **इलाज योग्य?:** इलाज योग्य रोग।

दवा प्रतिरोधी टीबी(DR-TB):

- **दवा प्रतिरोधी टीबी तब होती है जब बैक्टीरिया टीबी के इलाज के लिए इस्तेमाल की जाने वाली दवाओं के प्रति प्रतिरोधी हो जाते हैं। इसका मतलब है कि दवा अब टीबी बैक्टीरिया को नहीं मार सकती।**
- DR-TB उसी तरह फैलती है जिस तरह दवा-संवेदनशील टीबी फैलती है।
- DR-TB तब भी हो सकती है जब टीबी के इलाज के लिए प्रयुक्त दवाओं का दुरुपयोग या कुप्रबंधन किया जाता है।
- **MDR-TB: MDR-TB** पर कम से कम आइसोनियाज़िड और रिफाम्पिसिन, जो कि दो सबसे शक्तिशाली टीबी रोधी दवाएं हैं, कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।
- **XDR TB:** जो लोग **आइसोनियाज़िड** और **रिफाम्पिसिन के** साथ-साथ किसी भी फ्लोरोक्विनोलोन और कम से कम तीन इंजेक्शन योग्य द्वितीय-पंक्ति दवाओं (अमीकासिन, कैनामाइसिन, कैप्रियोमाइसिन) के प्रति प्रतिरोधी होते हैं, उन्हें **XDR TB** कहा जाता है।

भारत में क्षय रोग (टीबी) से संबंधित तथ्य

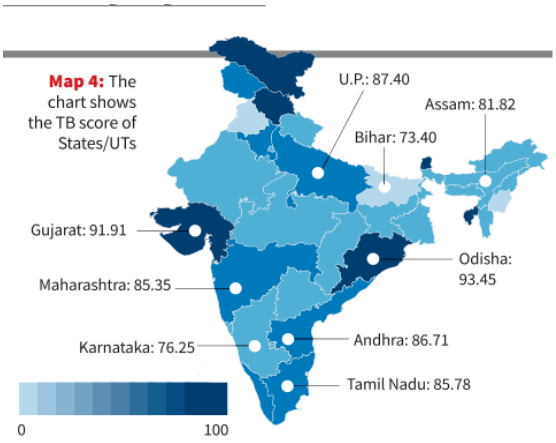

- **घटना और मृत्यु दर:** भारत में टीबी की घटना 2022 में 200 प्रति लाख से नीचे आ गई, जो 2015 में 237 प्रति लाख से कम है - 16% की गिरावट।
    - **भारत में टीबी से मृत्यु दर 2022 में 23 प्रति लाख थी - जो 2015 की तुलना में 18% कम है।**
- **उपचार सफलता दर (2021):** गंभीर रूप से दवा प्रतिरोधी टीबी - सबसे कम सफलता दर 45%।
    - एमडीआर/आरआर-टीबी (रिफैम्पिसिन प्रतिरोधी) - सफलता दर 74%।
    - प्री-एक्सडीआर-टीबी (फ्लोरोक्विनोलोन के प्रति प्रतिरोधी एमडीआर-टीबी) - सफलता दर 68%।
- **राज्य प्रदर्शन (टीबी सूचकांक):**
    - **सर्वोत्तम प्रदर्शन करने वाले राज्य**: हिमाचल प्रदेश, ओडिशा, गुजरात।
    - **सबसे खराब प्रदर्शन करने वाले राज्य**: पंजाब, बिहार, कर्नाटक।
- **स्वास्थ्य व्यय और कवरेज**
    - भारत की 10% से अधिक आबादी को स्वास्थ्य पर बहुत ज़्यादा खर्च करना पड़ता है - जो कि टीबी के उच्च बोझ वाले 14 निम्न-मध्यम आय वाले देशों में तीसरा सबसे ज़्यादा है।
    - यदि स्वास्थ्य व्यय किसी परिवार की आय या खपत के 10% से ज़्यादा है, तो यह बहुत ज़्यादा है।
    - भारत की 60% से ज़्यादा आबादी के पास स्वास्थ्य कवरेज है - जो कि निम्न-मध्यम आय वाले देशों में तीसरा सबसे ज़्यादा है।

टीबी उन्मूलन में भारत के प्रयास -

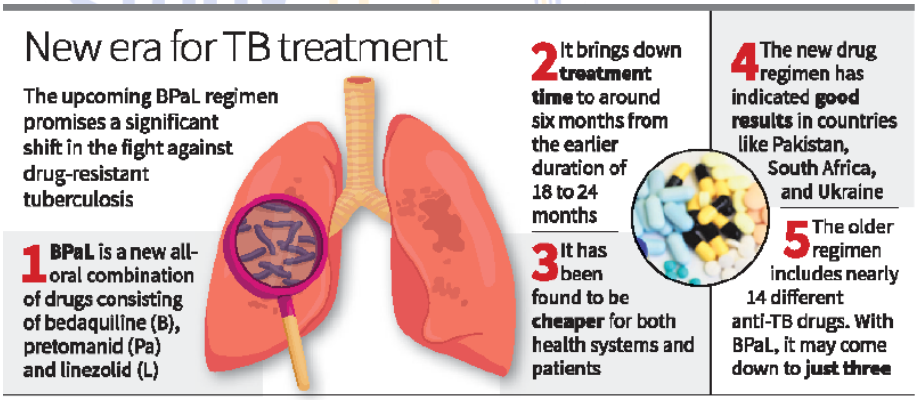

- **मूल्यांकन और उपचार को मजबूत करना:** टीबी और दवा प्रतिरोध का शीघ्र पता लगाने के लिए आणविक परीक्षण का विस्तार।
    - दवा प्रतिरोधी टीबी के लिए लघु, पूर्णतः मौखिक **BPaLM** उपचार(बेडाक्विलाइन, प्रीटोमैनिड, लाइनजोलिड और मोक्सीफ्लोक्सासिन) का प्रचलन।
    - गहन मामले खोज के लिए 100 दिवसीय अभियान का शुभारंभ।
    - नमूना संग्रहण और परिवहन को अनुकूलित करने के लिए डायग्नोस्टिक्स नेटवर्क की स्थापना।
- **पोषण एवं वित्तीय सहायता:**
    - पोषण सहायता के लिए निक्षय पोषण योजना (एनपीवाई) की पात्रता दोगुनी करके ₹1,000 प्रति माह कर दी गई।
    - एबी-पीएमजेएवाई सार्वजनिक और निजी दोनों क्षेत्रों में टीबी देखभाल के लिए पूर्ण बीमा कवरेज प्रदान करता है।

    - सामाजिक सुरक्षा योजनाओं के माध्यम से आउट-ऑफ-पॉकेट व्यय (ओओपीई) को कम करने के प्रयास।
- **टीबी देखभाल का विकेंद्रीकरण: आयुष्मान भारत के अंतर्गत** टीबी सेवाओं को एकीकृत किया गया:
    - **प्रधान मंत्री जन आरोग्य योजना (AB-PMJAY)** - माध्यमिक और तृतीयक देखभाल के लिए।
    - **आयुष्मान आरोग्य मंदिर (AAMs)** - प्राथमिक देखभाल के लिए, जिसमें बलगम संग्रह और रेफरल सेवाएं शामिल हैं।
    - जमीनी स्तर पर टीबी मामलों को संभालने के लिए एएएम में सामुदायिक स्वास्थ्य अधिकारियों को प्रशिक्षण देना।
- **सामुदायिक सहभागिता और समर्थन:** रोगी परामर्श और समर्थन के लिए **टीबी चैंपियंस (टीबी से बचे लोगों)** की भागीदारी।
    - शीघ्र रेफरल और टीबी मृत्यु दर में कमी लाने के लिए **तमिलनाडु कासनोई एराप्पिला थिट्टम (टीएन-केईटी)** जैसे समुदाय-आधारित हस्तक्षेप।
- **समानता और लक्षित हस्तक्षेप:** एनटीईपी के अंतर्गत टीबी देखभाल के लिए लैंगिक रूप से-उत्तरदायी दृष्टिकोण को अपनाना।
    - जनजातीय समुदायों, प्रवासियों और बेघर आबादी जैसे कमजोर समूहों तक लक्षित पहुंच।
    - स्वास्थ्य संबंधी कमजोरियों की बेहतर समझ के माध्यम से टीबी और दिव्यांगता से निपटने के लिए प्रारंभिक कार्य।
- **जागरूकता और सार्वजनिक सहभागिता:** टीबी के कलंक और गलत सूचना को दूर करने के लिए सार्वजनिक जागरूकता अभियान को मजबूत किया गया।
    - दवा प्रतिरोधी टीबी और रोगाणुरोधी प्रतिरोध (एएमआर) पर ध्यान केंद्रित करना।
- **100 दिवसीय गहन टीबी मुक्त भारत अभियान (7 दिसंबर, 2024 को लॉन्च):**
    - **लक्षित स्क्रीनिंग:** पोर्टेबल एक्स-रे मशीनों ने उच्च जोखिम वाले समूहों जैसे मधुमेह रोगियों, धूम्रपान करने वालों, शराब पीने वालों, एचआईवी रोगियों, बुजुर्गों और टीबी रोगियों के संपर्कों को लक्षित किया।
    - **एआई-संचालित निदान:** एआई-आधारित एक्स-रे ने संदिग्ध मामलों को तुरंत चिह्नित किया, न्यूक्लिक एसिड एम्प्लीफिकेशन टेस्ट (एनएएटी) के माध्यम से पुष्टि की गई।
    - **व्यापक पहुंच:** अभियान के तहत 12.97 करोड़ संवेदनशील व्यक्तियों की जांच की गई, जिसमें 7.19 लाख टीबी के मामलों की पहचान की गई, जिनमें 2.85 लाख लक्षणविहीन मामले शामिल थे।

चुनौतियाँ जो अभी भी कायम हैं -

- **उच्च बोझ और घटना में धीमी गिरावट:** टीबी की घटना 237 प्रति 100,000 (2015) से घटकर 195 प्रति 100,000 (2023) हो गई - लेकिन यह गति 2025 तक टीबी उन्मूलन के लक्ष्य को पूरा करने के लिए अपर्याप्त है।
- **विलंबित निदान और उपचार:** 50% से अधिक टीबी रोगी अभी भी निजी क्षेत्र में देखभाल चाहते हैं, जहां देखभाल का स्तर असमान है।
    - निजी क्षेत्र में निदान में देरी, अनुचित उपचार और कुप्रबंधन दवा प्रतिरोध को बढ़ावा देते हैं।
- **जेब से किया जाने वाला व्यय (ओओपीई):** एबी-पीएमजेएवाई और एनपीवाई के बावजूद, मजदूरी हानि, परिवहन और देखभालकर्ता सहायता जैसी अप्रत्यक्ष लागतें उच्च बनी हुई हैं।
    - वित्तीय बोझ के कारण उपचार का अनुपालन न करने और बीमारी के पुनः वापस आने का जोखिम बढ़ जाता है।
- **स्वास्थ्य प्रणाली का खराब एकीकरण:** टीबी रोगियों में अन्य बीमारियों (जैसे, सीओपीडी, मधुमेह) के लिए एकीकृत जांच का अभाव।
    - निजी और सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों के बीच कमजोर रेफरल संबंध।
- **कलंक और सामाजिक बाधाएं:** टीबी रोगियों को सामाजिक कलंक का सामना करना पड़ता है, विशेषकर महिलाओं और कमजोर समूहों को।

  - कलंक लोगों को देखभाल लेने और उपचार पूरा करने से हतोत्साहित करता है।
- **हाशिए पर पड़े समूहों तक सीमित पहुंच:** भौगोलिक और सामाजिक-आर्थिक बाधाओं के कारण जनजातीय, प्रवासी और बेघर आबादी को सेवाएं नहीं मिल पाती हैं।
  - हाशिए पर पड़े समूहों में स्वास्थ्य संबंधी व्यवहार सांस्कृतिक और तार्किक चुनौतियों से प्रभावित होता है।

क्या किया जाने की जरूरत है -

- **प्रारंभिक पहचान और निदान को मजबूत करना: प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों (पीएचसी)** पर तीव्र आणविक परीक्षण को बढ़ाना।
  - एआई-आधारित छाती एक्स-रे और अग्रिम आणविक परीक्षण का विस्तार करना।
  - निजी क्षेत्र में शीघ्र रिपोर्टिंग और निदान के लिए प्रोत्साहन लागू करना।
- **पूर्ण वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करना:** AB-PMJAY कवरेज का विस्तार करें ताकि इसमें वेतन हानि, परिवहन और देखभालकर्ता सहायता जैसी सभी अप्रत्यक्ष लागतें शामिल हों।
  - टीबी से बचे लोगों के लिए पायलट आजीविका कार्यक्रम।
  - आर्थिक रूप से कमजोर पृष्ठभूमि वाले लोगों के लिए एनपीवाई पात्रता में वृद्धि की जाएगी।
- **निजी क्षेत्र की सहभागिता में सुधार:** निजी क्षेत्र के लिए एक मानकीकृत टीबी उपचार प्रोटोकॉल लागू किया जाए।
  - निजी सुविधाओं में पाए गए टीबी मामलों के लिए अनिवार्य रेफरल प्रणाली स्थापित करना।
  - एनटीईपी दिशानिर्देशों के अनुपालन के लिए निजी स्वास्थ्य सेवा प्रदाताओं को प्रोत्साहन प्रदान करना।
- **विकेंद्रीकरण और एकीकरण को मजबूत करना: आयुष्मान आरोग्य मंदिरों** में निदान, उपचार और रेफरल प्रणाली में सुधार करना।
  - सामुदायिक स्वास्थ्य कार्यकर्ताओं को सीओपीडी, मधुमेह और अवसाद जैसी सह-रुग्णताओं से निपटने के लिए प्रशिक्षित करना।
  - ग्रामीण और शहरी केन्द्रों में देखभाल के समान मानक सुनिश्चित करना।
- **कलंक और जागरूकता अंतराल को संबोधित करना:** सफल COVID-19 संचार मॉडल का उपयोग करके लक्षित टीबी जागरूकता अभियान शुरू करना।
  - कलंक और गलत सूचना को कम करने के लिए समुदाय-नेतृत्व वाली सहभागिता को बढ़ावा देना।
  - टीबी चैंपियंस को जमीनी स्तर पर जागरूकता अभियान चलाने के लिए प्रोत्साहित करना।
- **कमज़ोर समूहों के लिए लक्षित समर्थन:** जनजातीय और प्रवासी समुदायों के लिए अनुरूप रणनीति विकसित करना।
  - दूरस्थ एवं वंचित क्षेत्रों में मोबाइल टीबी देखभाल इकाइयां उपलब्ध कराना।
  - लैंगिक रूप से संवेदनशील और सांस्कृतिक रूप से उपयुक्त टीबी देखभाल सुनिश्चित करना।

स्रोत:

- **The Hindu: The need for universal and equitable health coverage**
- **The Hindu: Imagining a 360° and comprehensive TB care response**
- **The Hindu: TB treatment success rates are improving gradually in India**